प्र. 3. जैन लेखनकला का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

Explain the importance of Jain art of writings.

अथवा / OR

जैन मूर्तिकला का वर्णन कीजिए।

Describe the Jain art of statue (Sculpture).

प्र. 4. अंग आगमों का परिचय लिखिए।

Write an introduction of Ang Canon.

अथवा / OR

किन्हीं चार जैन दार्शनिक ग्रन्थों का परिचय लिखिए।

Write an introduction of any four Jain Philosophical Text.

प्र. 5. किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए –

Write short note on any four-

(i) जैनाचार्य/Jain Monk /Acharya

(ii) जैनस्तूप/Jain Mounds

(iii) जैन चित्रकला/Jain Painting

(iv) जैन पुराण/Jain Puran

(v) जैन काव्य साहित्य/Jain Prose Literature

♦♦♦

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)

प्रथम पत्र : जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला

समय : 3.00 घण्टे **पूर्णांक : 80**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. भगवान महावीर के सिद्धान्तों की वर्तमान में प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

Explain the application of the theory of Lord Mahaveer in current era.

अथवा / OR

जैन धर्म की परम्परा को स्पष्ट कीजिए।

Explain the tradition of Jain Religion.

प्र. 2. तीर्थ से आप क्या समझते हैं? किन्हीं तीन जैन तीर्थों का वर्णन कीजिए।

What do you know about Jain Place of Pilgrimage? Describe any three Jain Place of Pilgrimage.

अथवा / OR

जैन सम्प्रदायों का वर्णन कीजिए।

Describe the Sects of Jains.

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)

द्वितीय पत्र : जैन तत्त्व मीमांसा एवं आचार मीमांसा

समय : 3.00 घण्टे **पूर्णांक : 80**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. द्रव्य, गुण और पर्याय के सम्बन्ध पर प्रकाश डालें।
Throw the light on relationship of Substances, Quality and Nodes.

अथवा / OR

धर्मास्तिकाय व अधर्मास्तिकाय के स्वरूप को विस्तार से समझाइये।
Explain the nature of Dharmastikaya and Adharmastikaya.

प्र. 2. आकाशास्तिकाय के स्वरुप को समझाइये।
Explain the nature of Space.

अथवा / OR

जैन दर्शन के अनुसार 'षड्जीवनिकाय' को विस्तार से समझाइये।
Explain in detail the concept of 'Six types of living beings' in Jain Philosophy.

प्र. 3. परमाणु के स्वरूप एवं उसकी बंध प्रक्रिया को समझाइये?
Explain the nature of Atom (Parmanu) and its bondage (Bandh) process.

अथवा / OR

जैन आचार के तत्त्व मीमांसीय आधार को विस्तार से समझाइये।
Explain in detail the Metaphysical basis of Jain Ethics.

प्र. 4. श्रावक की प्रतिमा पर निबंध लिखें।
Write an essay on 'Intensive discipline' of Householder.

अथवा / OR

श्रमणाचार पर विस्तृत टिप्पणी लिखें।
Write long note on Ethics of Monk (Shramanachara).

प्र. 5. जैन धर्म की संघीय व्यवस्था पर प्रकाश डालें।
Throw the light on organisation of Jain Veligious order.

अथवा / OR

नव तत्त्वों को समझाइये।
Explain about Nine Elements.

♦♦♦

अथवा / OR

सम्प्रज्ञात–असम्प्रज्ञात समाधि क्या है? व्याख्या करें।

What is Samprajnat and Asamprajnat Samadhi. Explain it.

प्र. 4. कर्म बन्धन की अवधारणा और प्रक्रिया समझाइयें।

Explain the concept of Karma Bondage and it's process.

अथवा / OR

मुक्ति की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

Throw a light on the process of liberation.

प्र. 5. 'कर्म सिद्धान्त और पुनर्जन्म' पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on 'Karma theory and Rebirth'.

अथवा / OR

गुणस्थान की क्या परिभाषा है? प्रत्येक गुणस्थान की व्याख्या कीजिए।

What is the definition of the 'Gunsthanas'? Explain it's every stages.

♦♦♦

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)

तृतीय पत्र : जैन ध्यान, योग एवं कर्म मीमांसा

समय : 3.00 घण्टे **पूर्णांक : 80**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन योग क्या है? जैन योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा कीजिए।

What is Jain Yoga? Discuss the historical background of Jain Yoga.

अथवा / OR

जैन परम्परा में ध्यान क्या है? उसके भेद–प्रभेदों का वर्णन करें।

What is the concept of meditation in Jain Tradition and describe it's forms.

प्र. 2. 'जैन योग में लेश्या' पर एक निबन्ध लिखें।

Write an essay on 'Leshya in Jain Yoga'.

अथवा / OR

'प्रेक्षाध्यान' पर एक विस्तृत नोट लिखें।

Write the detail note on 'Preksha Meditation'.

प्र. 3. 'दशपलिबोध' और जीवन शैली पर एक निबन्ध लिखें।

Write an essay on 'Ten Impediments and Life Style'.

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (पूर्वार्द्ध)

चतुर्थ पत्र : जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. 'दर्शन' शब्द का क्या अर्थ है? उसके भेदों को समझाइए।
What is the meaning of the word 'Philosophy' (Darsana)? Explain its differences.

अथवा / OR

ज्ञानेन्द्रिय के स्वभाव सम्बन्धी विभिन्न भारतीय दर्शनों के विचारों को समझाइए।
Discuss the views of various schools of Indian-philosophy regarding the nature of object of knowledge.

प्र. 2. मतिज्ञान के भेदों की विस्तार से समीक्षात्मक व्याख्या करें।
Critically explain the kinds of Mati-gyan in detail.

अथवा / OR

श्रुत का अर्थ लिखें और विस्तार से श्रुतज्ञान के भेदों को समझावें।
Write the meaning of shrut and explain in detail the types of shrut-gyan.

प्र. 3. अवधिज्ञान के भेदों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
Throw light on the kinds of clairvayance (Avadhi-gyana).

अथवा / OR

अवधिज्ञान एवं मनः पर्यवज्ञान की परस्पर भिन्नता पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखिए।
Write an essential essay on the difference between Avadhi and Manah-paryava gyana.

प्र. 4. जैन न्याय के उद्भव और विकास पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
Throw light in detail on the origin and development of Jaina-Logic.

अथवा / OR

भारतीय न्यायशास्त्र के लिए तर्कशास्त्र वेत्ताओं के योगदान पर एक सारभूत निबन्ध लिखिए।
Write an essential essay on the contribution of Logicians to the Indian Logic.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए –
Write short notes on any four of the following:

(i) स्मृति / Recollection
(ii) प्रयोगसिद्ध प्रत्यक्ष / Empirical Perception
(iii) भाष्य साहित्य/ Bhasya-Literature
(iv) षडावश्यक / Sadavasyakas
(v) वैनयिकीबुद्धि / Vainayiki-Budhi

♦♦♦

प्र. 3. भगवती सूत्र की विषय वस्तु पर प्रकाश डालें।

Throw light on the subject matter of Bhagvati Sutra.

अथवा / OR

भगवती सूत्र में प्रतिपादित आत्मकर्तृत्ववाद की विवेचना कीजिए।

Describe 'Atmakartrtvavada explained in Bhagvati Sutra.

प्र. 4. दश्वैकालिक सूत्र की विषय वस्तु पर प्रकाश डालें।

Throw light on main theme of 'Dasvekalika Sutra'.

अथवा / OR

उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर गुरू–शिष्य के सम्बन्ध को समझाए।

Describe the Teacher-Disciple relation on the basis of Uttaradhyan Sutra.

प्र. 5. समयसार का परिचय देते हुए नय के स्वरूप व भेद को स्पष्ट करें।

Give an introdution of the text 'Samayasar' and explain the nature and type of Naya (Standpoint).

अथवा / OR

निम्न की व्याख्या कीजिए।/Explain the following.

(i) तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहणेण।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्केज्ज छलं ण धेत्तव्वं।।

(ii) ण वि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो।
एवं भणंति सुद्धं णादो जो सो दु सो चेव।।

♦♦♦

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)

पंचम पत्र : जैन आगम

समय : 3.00 घण्टे **पूर्णांक : 80**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. आचारांग सूत्र के अनुसार षड्जीवनिकाय की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

Explain the concept of Sadjivanikaya according to the Acharanga Sutra.

अथवा / OR

आचारांग सूत्र के अनुसार अहिंसा के स्वरूप पर प्रकाश डालें।

Throw light on the concept of Non-violence on the basis of Acharanga Sutra.

प्र. 2. सूत्रकृतांग के आधार पर नियतिवाद को स्पष्ट करें।

Clarify the concept of Fatalists (Niyativada) on the basis of Sutra Kritanga.

अथवा / OR

अज्ञानवादी व क्रियावादी के सिद्धान्त को सूत्रकृतांग के आधार पर समझाइए।

Explain the concept of Ajanavadi and Kriyavadi on the basis of Sutra Kritanga text.

प्र. 3. सामान्य व विशेष में भेद है या अभेद? सन्मति प्रकरण के अनुसार निर्णय दें।

Is there Bheda or Abheda between Samanya and Vishesh? Give decision according to Sanmati Prakaran.

अथवा / OR

विविध नयों से तत्त्व के स्वरूप पर प्रकाश डालें।

Elaborate the real nature of Tattva (Substance) from the various points of view.

प्र. 4. भंगों के सात प्रकार ही क्यों हैं? सप्तभंगी तरंगिणी के अनुसार उत्तर दें।

Why there are only seven Bhangas (Particular forms of expression)? Answer according to the Saptbhangi Tarangini.

अथवा / OR

वस्तु के अस्तित्व व नास्तित्व धर्म किस प्रकार सप्तभंगी द्वारा व्याख्यायित होते हैं? स्पष्ट करें।

How the Astitva (form of affirmation) and Nastitva (form of negation) are expressed through Saptabhangi (sevenfold predication)? Explain.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिये –

Write short notes on any four of the following :

(i) अनुयोगद्वार सूत्र परिचय / Introduction of Anuyogdwara

(ii) नयवाद / Nayavada

(iii) स्यात् पद / Use of the word Syat

(iv) सत्ता व असत्ता / The real and the unreal

(v) वस्तु का प्रतिक्षण उत्पाद–व्यय / Origination & Cessation in a substance at the same time

(vi) भाव निक्षेप / Bhava Nikshepa

♦♦♦

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)

षष्ठ पत्र : अनेकान्त, नय, निक्षेप और स्याद्वाद

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. वस्तु–स्वरूप के निर्धारण में द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव की अपेक्षा का क्या महत्त्व है? उक्त चारों अपेक्षाओं से भगवती सूत्र के अनुसार लोक के स्वरूप को स्पष्ट करें।

What is the importance of Dravya, Kshetra, Kala & Bhava aspects in deciding the nature of Dravya. Explain the nature of Loka in regards to the said fourfold aspects acording to Bhagvati Sutra.

अथवा / OR

अनुयोगद्वार सूत्र के अनुसार संग्रह नय एवं व्यवहार नय के स्वरूप पर प्रकाश डालें।

Throw light on the concept of Sangrah Naya and Vyavahar Naya according to Anuyogdwara Sutra.

प्र. 2. जीव व पुद्गल के भेद या अभेद के विषय में आचार्य सिद्धसेन के मत को समझाएं।

Explain the opinion of Acharya Siddhasena with regards to the Bheda or Abheda of Jiva and Pudgala.

अथवा / OR

अनेकान्तवाद व नयवाद के परस्पर–सम्बन्ध को स्पष्ट करें।

Explain the co-relation of Anekant outlook and Nayavada.

प्र. 3. भारतीय दर्शन के अनुसार अविद्या के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

Explain the nature of Avidya according to Indian Philosophy.

अथवा / OR

भारतीय दर्शन के अनुसार कर्मवाद पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on Karmvada according to Indian Philosophy.

प्र. 4. भारतीय दर्शन के प्रमाण विचार पर तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

Explain the comprative study of Pramana theory in Indian Philosophy.

अथवा / OR

जैन दर्शन के अनुसार अनेकान्तवाद पर प्रकाश डालिए।

Throw light on Anekantvad (Non-absolutism) according to Jain Philosophy.

प्र. 5. किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए–

Write short notes on any four of the following-

1. ध्यान के प्रकार/Types of Meditation
2. प्रेक्षाध्यान/Preksha Meditation
3. गीता दर्शन के तीन योग/Three Yogas is Geeta Philosophy
4. आत्मा/Soul
5. व्रत/Vrat
6. अहिंसा/Non-violence

♦♦♦

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)

सप्तमपत्र : जैन धर्म–दर्शन और भारतीय धर्म–दर्शन

समय : 3.00 घण्टे **पूर्णांक : 80**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. सत् के स्वरूप पर जैन, बौद्ध एवं वेदान्त दर्शन के अनुसार लिखिए।

Write the nature of Sata according to Jain, Bauddha and Vedanta Philosophy.

अथवा / OR

भारतीय दर्शन के अनुसार मोक्ष के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the nature of liberation according to Indian Philosophy.

प्र. 2. भारतीय दर्शन के अनुसार अपरिग्रह सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

Explain the theory of Non-passession according to Indian Philosophy.

अथवा / OR

जैन एवं बौद्ध के अनुसार तप के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।

Explain the nature of 'Tapa' according to Jain and Bauddha Philosophy.

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा – 2017

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

एम.ए. (उत्तरार्द्ध)

अष्टम पत्र : जैन धर्म–दर्शन और भारतीयेतर धर्म–दर्शन

समय : 3.00 घण्टे **पूर्णांक : 80**

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. चिदणु को परिभाषित करते हुए लाइबनित्ज के अनुसार चिदणुवाद एवं जैन आत्मवाद की तुलना करें।

Define Monads and do comparative study of Leibnitz monadology & Jain concept of Soul.

अथवा / OR

अरस्तु के दर्शन में द्रव्य का क्या स्वरूप है। उसे विस्तार से लिखें।

What is nature of substance in Aristotlean philosophy. Explain in detail.

प्र. 2. ह्यूम एवं काण्ट के दर्शन में आत्मा का क्या स्वरूप है विस्तार से बताते हुए जैन दर्शन में आत्मा के साथ मात्र तुलनात्मक विवरण दें।

Explain the concept of soul in Hume and Kantian philosophy in detail and mantion only comparative points of soul in Jain Philosophy.

अथवा / OR

स्पिनोजा एवं लाइबनीज के दर्शन में आत्मा–शरीर सम्बन्ध के सन्दर्भ में विचार लिखें एवं जैन दर्शन के साथ तुलना करें।

Explain the Body-mind relation concept in Spinoza and Leibnitz philosophy and compare with Jaina Philosophy.

प्र. 3. डेकार्ट के दर्शन में द्रव्य के स्वरूप को प्रकट करते हुए जैन दर्शन के साथ तुलना करें।

Highlight the concept of substance in Descartes Philosophy & compare it with Jaina Philosophy.

अथवा / OR

प्लाटिनस, लाइबनीज एवं बर्कले के दर्शन में जगत् के स्वरूप पर प्रकाश डालें।

Explain the concept of universe in Platinus, Leibnitz & Berkley's Philosophy.

प्र. 4. ईसाई धर्म में मान्य ईश्वर विचार, मुक्ति मार्ग एवं नीतिशास्त्र पर प्रकाश डालें एवं उसकी जैन दर्शन से तुलना करें।

Highlight the concept of God, Path of liberation and Ethics of Christianism & Compare it with Jainism.

अथवा / OR

जैन धर्म में मान्य ईश्वर, मानव एवं नैतिक विचार की पारसी धर्म के साथ तुलना करें।

Explain the concept of Soul, Humanism and Ethics in Jaina philosophy & compare it with Parasi religion.

प्र. 5. निम्न में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

Write a short note on any two of the following-

1. अनेकान्त एवं लोकतंत्र में समानता
   Similaritis in Anekant and Democracy.
2. जैन अहिंसा द्वारा पर्यावरण सन्तुलन
   Environmental Balance through Jaina Ahimsa
3. आर्थिक विषमता के समाधन में अपरिग्रह सिद्धान्त
   The solution of economical disparity through Non-possession

♦♦♦